12

सामाजिक समूह कार्य

*ज्योति कक्कड़

प्रस्तावना

समाज कार्य को एक कला, विज्ञान तथा एक व्यवसाय के रूप में परिभाषित किया गया है जो आम लोगों को समाज कार्य अभ्यास के माध्यम से व्यक्तिगत, सामूहिक तथा सामुदायिक संबंधों की तुष्टि की प्राप्ति हेतु, लोगों को उनकी व्यक्तिगत, सामूहिक (विशेष रूप से पारिवारिक) तथा सामुदायिक समस्याओं का हल खोजने में सहायता प्रदान करता है (फारले तथा अन्यों के अनुसार)। इसका मुख्य केन्द्रबिन्दु आम लोगों के सामाजिक क्रियाशीलता उनकी योग्यता, उनके परस्पर मेल-जोल तथा संबंधों में सुधार लाना है। इस हेतु अपनाए जाने वाला मार्ग एक सामान्य प्रकृति का है तथा इसमें तीनो विधियों, यथा वैयक्तिक समाज कार्य (Case Work), समूह कार्य तथा सामुदायिक संगठन का प्रयोग सन्निहित है।

समाज कार्य व्यवसाय को वर्ष प्रति वर्ष एक व्यावहारिक दृष्टिकोण को खोजते हुये पाया गया है। इसने अपने प्रथम प्रयास में, व्यवहार की एक विशिष्ट विधि की पहचान कराने का प्रयास किया है तथा इस संबंध मे प्रथम विकसित की गई विधि वैयक्तिक समाज कार्य (Social Case Work) के बाद में, समूह कार्य तथा सामुदायिक संगठन का विकास हुआ। सन् चालीस के दशक में दो अन्य व्यावसायिक विधियों, यथा प्रशासन तथा अनुसंधान विकसित की गईं।

समाज कार्यकर्ताओं द्वारा एक आधार विधि के रूप में समूह कार्य विधि को, जो व्यक्तियों की सामाजिक क्रियाशीलता मे सुधार हेतु उनकी सहायता प्रदान करती है, को अधिमान्यतः स्वीकार किया जा चुका है। यह एक ऐसी विधि है जो समूहों को गतिविधि के माध्यम के रूप में प्रयोग करती है। एक प्रक्रिया को उसके सुव्यवस्थित रूप में अच्छी तरह से समझा जा सकता है, अतः इसका क्रियान्वयन एक विशिष्ट उद्देश्य की प्राप्ति हेतु सदैव किया जाता है। समूह कार्य एक ऐसी

* डॉ. ज्योति कक्कड़, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली

विधि है जो समाज कार्यकर्ता समाज की समस्त आयु समूहों तथा वर्गों को सहायता प्रदान करने में उनकी सामाजिक क्रियाशीलता की वृद्धि में उनकी समस्याओं का प्रभावशाली ढंग से सामना करने में प्रयोग में लाते हैं। ऐसा करने में समाज कार्यकर्ता सामाजिक, भावनात्मक तथा मानसिक समस्याओं की अनुक्रिया में उपचार दलों के महत्वपूर्ण सदस्य बन गये हैं। इसके अतिरिक्त समाज कार्यकर्ता गैर-चिकित्सकीय संस्थापनाओं में भी सामाजिक सद्भाव तथा एकीकरण की दिशा मे भी कार्य निष्पादन करते हैं। इन संस्थापनाओं मे वे एक समुदाय के अन्तर्गत, बच्चों, महिलाओं तथा युवकों के समूह के साथ भी कार्य निष्पादित कर सकते हैं। ये दल आसन्न समस्याओं अथवा सामुदायिक परिवर्तन तथा विकास संबंधी समस्याओं के निराकरण में एक समुदाय आधारित अनुक्रिया के विकास हेतु एक माध्यम बन जाते हैं।

प्रकृति एवं उद्देश्य

समूह कार्य समाज कार्य की एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा व्यक्तियों की समस्याओं के समाधान मे उनकी सहायता की जाती है तथा इसका उद्देश्य वैयक्तिक, सामाजिक तथा सामुदायिक स्तरों पर वांछित परिवर्तनों को भी सामने लाना होता है। समूह कार्य विधि दो स्तरों पर, अर्थात् वैयक्तिक स्तर पर तथा समग्र सामूहिक स्तर पर कार्य निष्पादन करती हैं। सामाजिक समूह कार्य व्यक्तियों को उनमें अन्तर्निहित क्षमता के विकास में तथा उनके विद्यमान परिवेश के अन्तर्गत उसका बेहतर रूप से मुकाबला करने हेतु उनकी क्षमताओं की स्वाभाविक रूप से पहचान करने में उनको सहायता प्रदान करता है। यह उनमें आचरण की नवीन पद्धतियों को सीखने तथा मनोगत करने में सहायता प्रदान करता है जो न केवल किसी भी प्रकार समूह में उनके स्थान तक सीमित होते हैं वरन जीवन में उनकी सहभागिता के बाहर भी बनाये रखे जाते हैं। इस प्रकार समूह कार्य उसके सदस्यों को भावनात्मक तथा सामाजिक सहायता प्रदान करता है; लोकतान्त्रिक सहभागिता तथा नागरिकता को प्रोत्साहित करता है; नवीन भूमिकाओं को सीखने तथा निष्पादन में उनको सहायता प्रदान करता है तथा उनमें किसी प्रकार के कुसमायोजनों का उपचारण करता है।

समूह कार्य प्रक्रिया वैयक्तिक समाज कार्य से भिन्न होती है। यहां पर सदस्यों में परस्पर मेल-जोल होना संवाद परिवर्तन लाने का एक मंच है। यहां कार्यकर्ता

तथा सदस्य कार्यकर्ता तथा समूह, सदस्य तथा सदस्य से समूह तक के संबंध परस्पर आकर्षण तथा संवाद की शक्तियों का सृजन करते हैं। इन बंधो का प्रयोग करते हुये, कोई समूह आधारभूत आवश्यकताओं तथा मानवीय क्षमताओं के सुदृढ़ीकरण का एक साधन बन जाता है।

समूह कार्य प्रक्रिया का एक अन्य मुख्य बिन्दु उसके द्वारा कार्यक्रम माध्यम का उपयोग किया जाना है। समूह कार्य में उपयोग किये जाने वाले मुख्य माध्यम नाटक, चर्चा, थियेटर, कला तथा शिल्प, संगीत, नृत्य, भ्रमण तथा दावतें हैं। इन गतिविधियों में सन्निहित होने के माध्यम से, विभिन्न भूमिकाओं तथा दायित्वों का निर्वहन करते हुए, नियमों तथा विनियमों के अनुसरण करते हुए तथा गतिविधियों का निष्पादन करते हुए, सदस्यों का भिन्न-भिन्न विधियों से विकास होता है।

परिभाषा

समूह कार्य, व्यक्तियों के साथ समूह में कार्य करने की एक विधि है। एक समूह दो अथवा दो से अधिक व्यक्तियों से बन सकता है। समूह कार्य एक ऐसा मार्ग है जिसका उद्देश्य व्यक्तिगत विकास करना, सामाजिक क्रियाशीलता में अभिवृद्धि करना तथा सामाजिक रूप से वांछित लक्ष्यों को उपलब्ध कराया जाना है। इस तथ्य की पहचान करते हुए कि व्यक्ति एक दूसरे पर आश्रित होते हैं, समूह कार्य विधि सामाजिक मेल-जोल में मार्ग-अवरोधों में कमी लाये जाने की अवधारणा तथा सामाजिक वांछनीय उद्देश्यों को निष्पादित किये जाने पर कार्य करती है। समूह कार्य की कुछ परिभाषाएं निम्नानुसार उद्धरित हैं:

हेलन नार्थन (1988) का कथन है कि व्यवसाय के सामान्य प्रयोजन के अन्तर्गत, लघु समूहों के साथ समाज कार्य के निष्पादन हेतु समूह का उपयोग सदस्यों को सहायता प्रदान करने के लिये निर्देशित किया जा सकता है जिससे कि मनोवैज्ञानिक-सामाजिक कृत्यों की विद्यमान समस्याओं के निष्पादन तथा निराकरण में, प्रत्याशित समस्याओं को दूर करने के प्रति तथा ऐसी परिस्थितियों में जहां गिरावट का डर है क्रियाशीलता के विद्यमान स्तर को कायम कर रखा जा सके। इसके अतिरिक्त, इसे समूह तथा व्यावसायिक क्रियाशीलता को और अधिक प्रभावशाली नमूनों को विकसित किये जाने तथा पर्यावरणीय बाधाओं को हटाने हेतु निर्देशित किया जा सकता है। किसी भी समूह के साथ, वांछित विशिष्ट परिणामों की प्राप्ति उनकी इच्छाओं, आवश्यकताओं, क्षमताओं, समूह से संबद्ध

सदस्यों की परिस्थितियों तथा स्वयं समूह के उद्देश्य तथा उसके स्वरूप के अनुसार बदलती रहती है।

कनोपका (1960) द्वारा समूह कार्य का वर्णन 'एक ऐसे दृष्टिकोण के रूप मे किया है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति की अधिकतम क्षमता को उसे समूह के साथ संबद्ध करते हुए यह समझने के लिये कि कब उसे इस हेतु योगदान करना है तथा कब उसे इससे पीछे हटना है, सतर्कतापूर्वक निर्देशित करना है।' उनके अनुसार सामाजिक समूह कार्य, समाज कार्य की एक ऐसी विधि है जो व्यक्तियों को प्रयोजनयुक्त समूह अनुभवों की सहायता अनेक सामाजिक क्रियाशीलता में वृद्धि करने में सहायता प्रदान करती है।

रीड (1997) के अनुसार, समूह कार्य का उद्देश्य सदस्यों की भलाई मे सुधार द्वारा उन्हें सहायता प्रदान करना तथा व्यक्तिगत दुखों से छुटकारा प्रदान कराना है। इसका निष्पादन इस कारण से होता है कि समूहों में 'समस्या निदान मे वृद्धि करने की क्षमता, गंभीर सामाजिक समस्याओं को विकसित होने से रोकने तथा सदस्यों के सामाजिक क्रियाशीलता को पुनर्स्थापित करने तथा कायम रखने की शक्ति विद्यमान होती है।'

टोसलैंड तथा रीवास (1984) द्वारा समूह कार्य का वर्णन लघु उपचारात्मक क्रिया के रूप में तथा कार्य दलों की सहायता से की गई एक लक्ष्य उन्मुख गतिविधि के रूप मे किया गया है जिसका उद्देश्य समूह के सदस्यों की सामाजिक-भावनात्मक आवश्यकताओं की आपूर्ति करना तथा कार्यों का निष्पादन करना है। यह गतिविधि एक सेवा प्रदाय प्रणाली के अन्तर्गत किसी समूह के व्यक्तिगत सदस्यों की ओर अथवा सम्पूर्ण समूह की ओर निर्देशित होती है। उनके अनुसार, समूह कार्यकर्ताओं का उद्देश्य सदस्यों को सहायता प्रदान करना अथवा उन्हें शिक्षित करना, उन्हें सामाजिक बनाने मे सहायता प्रदान करना तथा व्यक्तिगत विकास उपलब्ध कराना अथवा उनकी समस्याओं तथा चिन्ताओं के प्रति उपचारण प्रदान करना, सदस्यों का पुनर्वास करना अथवा उनकी उन्नति हेतु सहायता प्रदान करना हो सकता है। कार्यकर्ताओं में सदस्यों के सामाजिक वातावरण मे परिवर्तन लाये जाने की क्षमता भी होनी चाहिए। अतएव, सदस्यों को संस्थाएं तथा समुदाय जो उनके जीवन को प्रभावित करते हैं, का नियंत्रण हाथ में लेना चाहिए।

समूह कार्य तथा समूह उपचार में अन्तर किया जाना महत्वपूर्ण है। समूह कार्य की परिभाषा का स्पष्ट आशय यह है कि यह दोनों स्वस्थ तथा रुग्ण व्यक्तिओं की समस्याओं के निराकरण की ओर इंगित करती है। कोरसिनी (1957) तथा फ्रेंक (1952) द्वारा इन अवधारणाओं पर गहरी खोजबीन की गई है। कोरसिनी (1957) के अनुसार, सामूहिक मनोरोग चिकित्सा ऐसी प्रक्रियाओं में निहित हैं जो कि औपचारिक रूप से व्यवस्थित तथा संरक्षित समूहों में घटित होती हैं तथा जिनकी गणना वैयक्तिक सदस्यों में, निर्दिष्ट तथा नियंत्रित सामूहिक संवादों के माध्यम से, उनके व्यक्तित्व तथा व्यवहार में द्रुत गति से सुधार लाये जाने की दृष्टि से की जाती हैं। फ्रैंक (1952) ने किसी मनोचिकित्सक के नेतृत्व में समूह उपचार में सन्निहित होने को समूहों में विशिष्टतः मनोचिकित्सा रोगियों पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है। अधिकांश समूह सदस्य वे सेवार्थी (Clients) होते हैं जो उनके परस्पर वाद-विवाद से होने वाली अव्यवस्थाओं से भावनात्मक रूप से त्रस्त होते हैं तथा इन समूहों का लक्ष्य पीड़ा से छुटकारा पाना होता है तथा उनके सदस्यों के व्यक्तिगत तथा सामाजिक कर्त्तव्यों के निष्पादन में सुधार लाना होता है।

जब परिभाषाओं की तुलना की जाती है तो इनमें स्पष्ट रूप से अतिच्छादन (overlap) होना पाया जाता है। कई द्रष्टान्तों में तो, समूह कार्य अभ्यास भावनात्मक अथवा मानसिक समस्याओं वाले समूहों के प्रति निर्देशित होता है। अन्तर केवल इतना है कि समूह कार्य स्वस्थ व्यक्तियों के साथ-साथ समूहों से भी संबंधित होता है।

समूह कार्य का प्रयोग समाज कार्य के समस्त व्यवस्थापनों के अन्तर्गत किया जाता है। व्यावसायिक समाज कार्यकर्ता उनके समूह संस्थान की सम्पूर्ण जानकारी तथा कार्यप्रणाली का उपयोग किसी व्यक्ति के समायोजन तथा समाधान को प्रभावित किये जाने हेतु करते हैं। उनका मुख्य ध्यान सदैव एक व्यक्ति पर केन्द्रित होता है तथा परिवर्तन लाये जाने हेतु समूह ही एक माध्यम होता है। इसका उद्देश्य सामाजिक क्रियाशीलता में उन्नति लाया जाना है। कार्यक्रमों का उपयोग सदस्य दर सदस्य संवाद तथा परिवर्तन को प्रोत्साहित किये जाने में गति प्रदान करने हेतु किया जाता है। संक्षेप में, समूह कार्य के लक्ष्य केवल चिकित्सीय उपचार तथा भावनात्मक समस्याओं के उपचारण तक ही सीमित नहीं हैं (देखे बारकर 1995)। इनके उद्देश्य जानकारी का आदान-प्रदान, सामाजिक

तथा हस्त-कौशल का विकास, प्रवृत्तियों तथा मूल्यों में परिवर्तन तथा ऊर्जा को रचनात्मक तथा लाभकारी मार्गों की ओर मोड़ना हो सकते हैं। गतिविधियों की परिसीमाएं, सामूहिक गतिविधियों के रूप में सुसंगत तथा सामान्य रुचि के विषयों पर चर्चाएं, खेल, शैक्षणिक गतिविधियाँ, कला तथा हस्तशिल्प हो सकती हैं।

विकास का इतिहास

धर्मार्थ संस्था समितियां तथा समूह कार्य

समाज कार्य के इतिहास की खोज में किसी एक व्यक्ति के योगदान पर ही ध्यान केन्द्रित नहीं किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त इसके उद्‌भव होने की कोई निश्चित तिथि भी निर्धारित नहीं की जा सकती है। तथापि, इसके प्रारंभ को चैरिटी आर्गेनाईजेशन सोसायटी (सी.ओ.एस.) जैसी विशिष्ठ संस्थान के साथ अवश्य जोड़ा जा सकता है। कई लेखक आधुनिक समूह कार्य के विकास को सामाजिक संस्थाओं के साथ जोड़ते हैं। जैसा कि सर्वविदित है, औद्योगीकरण ही लोगों के ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर सामूहिक गमन का कारण बना। पुरातन सामाजिक संस्थाओं का आधार सदैव लोक कल्याण विषय बना रहा परन्तु नवीन उद्‌भव होने वाली संस्थाएं "स्वयं सेवा" के दृष्टिकोण को लेकर ही सामने आईं। इनमें परस्पर सहायता तथा समर्थन की आवश्यकता महसूस की गई। विकसित हुए मजदूर आन्दोलन में प्रौढ़ शिक्षा तथा सैर-सपाटे व भ्रमण जैसे कि कर्मियों तथा उनके परिवारों हेतु शिविर लगाये जाने की बात कही गई थी। कई युवा संस्थाएं विकसित हुई जिनमें काफी बड़ी संख्या में युवकों ने सहभागिता की। इन समस्त प्रयासों की पृष्ठभूमि में, नागरिक कार्यवाही तथा वे व्यक्ति जिनकी सहायता की जा रही थी, को सन्निहित करने संबंधी सम्मिश्रित प्रयासों की भूमिका रही। समूह कार्य के आधार में मनोरंजन आन्दोलन (Recreation Movement) का भी योगदान था। चूंकि सामाजिक आन्दोलन, निकटता से संघ के आठ घंटे प्रतिदिन संबंधी आंदोलन के संघर्ष से जुड़ा था, इसमें शैक्षिक तथा सांस्कृतिक रूप से पिछड़े वर्गों के अधिकारों पर जोर दिया गया था। इस आन्दोलन में मलिन बस्तियों के बच्चों के लिये खेल के मैदान को स्थापित करने तथा ग्रीष्मकालीन शिविरों के प्रवर्तन पर जोर दिया गया था। प्रारम्भ की गई अधिकांश गतिविधियां समूहों में की गई थीं जिनके परिणामस्वरूप सामूहिक मेल-जोल एक प्रमुख विषय बन गया। इस प्रकार व्यवस्थापन गृह (Settlement Houses),

पड़ोसी केन्द्र (Neighbourhood Centres), यहूदी केन्द्र (Jewish Centres), कैम्प फायर्स (Camp Fires) जैसी संस्थाएं प्रारंभिक समूह कार्य संस्थाएं थीं।

प्रथम विश्वयुद्ध के उपरान्त

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद की अवधि एक ऐसी अवधि थी जिसमें समाज कार्य प्रमुख रूप से धर्मार्थ संस्था समितियों (Charity Organization Societies) द्वारा प्रयोग किया गया तथा उस समय सामाजिक समूह कार्य लगभग नहीं के बराबर विकसित हुआ। तथापि, समाज में एक लोकतान्त्रिक दृष्टिकोण वाली सेवाओं का बड़ी संख्या में विकास हुआ।

संयुक्त राज्य अमेरिका में, बड़ी संख्या मे समाजसेवी संगठनों का विकास हुआ जिनमें एक समूह आचरण को लोकतान्त्रिक जीवन पद्धति के रूप में अपनाए जाने पर जोर दिया गया। अतः यह देखा गया है कि उस समय में सामाजिक समूह कार्य का एक लक्ष्य, एक दर्शन, एक आन्दोलन, एक मनोविज्ञान तथा एक व्यवसाय के रूप में परिकल्पना की गई (देखें कनोपका)। कार्यकर्ताओं को शिक्षित करने के महत्व का चित्रण करते हुए, मार्क स्टार (1937) जैसे कई विचारकों द्वारा समूह कार्य की अवधारणाओं, जैसे कि "क्रिया द्वारा सीखने", 'जहां समूह विद्यमान स्थिति में हैं वहां से प्रारम्भ करने' तथा अनौपचारिकता के प्रयोग पर जोर दिया गया।

समूह कार्य पाठ्यक्रम

समूह कार्य पाठ्यक्रम में समाज कार्य प्रारम्भ करने के प्रयास क्लारा कैसर द्वारा किये गये जिनके द्वारा क्लीवलैड में स्कूल ऑफ सोशल वर्क में व्यावसायिक समाज कार्य पाठ्यक्रम के भाग के रूप में प्रथम पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया गया तथा बाद में उनके द्वारा किये जा रहे इस कार्य को ग्रेस कॉयल द्वारा अपने हाथ मे लिया गया। समाज कार्य व्यवसाय में समूह कार्य का एकीकरण किया जाना एक सरल कार्य न था तथा इसे क्रमिक रूप से अभ्यास में लाया गया। इस प्रकरण में, आवश्यकता से जुझ रहे व्यक्तियों को सहायता प्रदान करने के उद्देश्य को समझना काफी सरल था। समूह कार्य की पृष्ठभूमि में आस-पड़ोस के दृष्टिकोण (Neighbourhood Approach) तथा स्वयं सेवा जैसे आन्दोलनों का व्यक्तिगत सहायता तथा प्रबन्धन से कोई संबंध न था।

सन् 1920 के दशक में, समूह कार्य को विभिन्न विषयों, व्यवसायों, जैसे कि शिक्षा, मनोविज्ञान तथा समाज कार्य से काफी अधिक सहायता मिली। सन् 1936 में, अमेरिकन एसोसियेशन फॉर स्टडी ऑफ ग्रुप वर्क का गठन किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य समूह कार्य की अवधारणाा को स्पष्ट करना था, परन्तु यह भ्रान्ति कई वर्षों तक जारी रही। कनोपका का कथन है कि समूह कार्यकर्ताओं ने स्वयं को समाज कार्य से पृथक व्यवसाय में पाया।

द्वितीय विश्वयुद्ध तथा समूह कार्य

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान की अवधि ऐसी थी जिसके दौरान समूह कार्य तथा समाज कार्य के एकीकरण पर जोर डाला गया। ये युद्ध सेवाएं ही थीं जो समूह कार्यकर्ताओं तथा समाज कार्यकर्ताओं को एक ही मंच पर लाईं। मनोविज्ञान के क्षेत्र के व्यवसायियों द्वारा अपनी चिकित्सीय सहायता (Therapeutic Interventions) द्वारा समूहों के साथ प्रयोग (Experiment) किया जाना प्रारम्भ कर दिया गया। शनैः-शनैः, समूहों के माध्यम से वैयक्तिकरण (Individualization) की अवधारणा ने कई लोगों को आकर्षित किया।

ग्रेस लांगवैल कौयल (Grace Longwell Coyle)

बाद के आने वाले वर्ष, समूह कार्य के समर्थकों के लिये, काफी अनिश्चितता से भरे रहे। 'द् अमेरिकन एसोसियेशन फार स्टडी ऑफ ग्रुप वर्क' द्वारा भी किसी विशिष्ट व्यवसाय से स्वयं को संबद्ध किये जाने में कठिनाई का अनुभव किया गया। कुछ व्यक्तियों ने इसे शिक्षा जैसे व्यवसाय से एकीकृत किये जाने का सुझाव दिया। तथापि, यह तथ्य कि इसे समाज कार्य संबंधी महाविद्यालयों में पढ़ाया जा रहा था, इसे इसके समीप लाया। तथापि, समूह कार्य के उद्भव के संबंध में किसी व्यक्ति विशेष से इसे संबद्ध किया जाना अथवा किसी तिथि का उल्लेख किया जाना काफी कठिन है, फिर भी वह मोड़ जब इसे समाज कार्य से संबंध किया गया, 1946 का वर्ष था तथा वह व्यक्ति जिसे इसका श्रेय दिया जा सकता है, ग्रेस लांगवैल कौयल थीं। उनके द्वारा समूह कार्य का व्यावसायिक समाज कार्य के साथ एकीकृत किये जाने का एक प्रकरण तैयार किया गया तथा यह प्रक्रिया 1955 के वर्ष में पूर्ण की गई जबकि अमेरिकन एसोसियेशन फॉर स्टडी ऑफ ग्रुप वर्क द्वारा नवगठित नेशनल एसोसियेशन ऑफ सोशल वर्कर्स के साथ स्वयं को जोड़ लिया गया। सामाजिक समूह कार्य का इतिहास यह

प्रदर्शित करता है कि किस प्रकार इसका परिवर्तन किसी क्षेत्र के रूपांकन, एक आन्दोलन तथा एक लक्ष्य से समाज कार्य विधि के रूप में हुआ।

सन् 1960 के दशक में, समूह कार्य व्यवसाय को प्रदान किये गये महत्व में गिरावट देखी गई। ऐसा एक नवीन विचारधारा के परिणामस्वरूप हुआ जिसके अन्तर्गत प्रजातीय (Generic) समाज कार्य व्यवसाय को महत्व प्रदान किया गया। समाज कार्य महाविद्यालयों में वैयक्तिक समाज कार्य (Case Work), समूह कार्य तथा सामुदायिक संस्था विषयों पर लोगों को प्रशिक्षण द्वारा विशेषज्ञ बनाये जाने के पाठ्यक्रमों का प्रस्तुतिकरण रोक दिया गया। यही प्रवृत्ति आगामी दशक में भी जारी रही। तथापि, 1979 के वर्ष में, संयुक्त राज्य अमेरिका तथा कनाडा के समूह कार्यकर्ता परस्पर सम्पर्क में आए तथा समूहों के गठन के लाभों के संबंध मे व्यावसायियों को जागरूक किये जाने तथा समूह कार्य में उन्नति लाये जाने के उद्देश्य से उनके द्वारा प्रथम वार्षिक सम्मेलन का आयोजन किया गया।

भारतवर्ष में विकास का इतिहास

भारतवर्ष में समूह कार्य का प्रादुर्भाव सन् 1936 में हुआ जबकि व्यावसायिक समाज कार्य शिक्षा को प्रारंभ किये जाने के उद्देश्य से समाज कार्य के प्रथम महाविद्यालय (स्कूल) के रूप में, सर दोराबजी 'टाटा ग्रेजुएट स्कूल ऑफ सोशल वर्क' नामक संस्था की स्थापना मुम्बई (तत्कालीन बुम्बई) में की गई। तत्पश्चात्, द्वितीय समाज कार्य महाविद्यालय दिल्ली में स्थापित किया गया जिसमें सामाजिक समूह कार्य विधि विषय को पाठ्यक्रम का एक भाग बनाया गया। बड़ोदरा में तृतीय स्कूल की स्थापना की गई जिसमें समूह कार्य व्यवसाय हेतु प्रबल प्रवृत्ति थी। वास्तव में यह महाविद्यालय वर्ष 1960 में समूह कार्य के अभिलेखों के प्रथम प्रकाशन के साथ सामने आया 'द एसोसियेशन ऑफ स्कूल्स ऑफ सोशलवर्क' ने टेक्नीकल कोआपरेशन मिशन (संयुक्त राज्य अमेरिका) के साथ मिलकर के समूह कार्य हेतु न्यूनतम मानकों का निर्धारण किया। वृहद रूप से, समस्त विद्यालयों ने वैयक्तिक समाज कार्य (Case work) समूह कार्य तथा सामुदायिक संस्था से संबधित पाठ्यक्रम अमरीकी नमूने के आधार पर प्रस्तुत किये तथा इनमें किसी प्रकार की विशेषज्ञता का प्रावधान नहीं किया गया था। इसके अतिरिक्त, भारतीय परिवेश में समूह कार्य के पश्चिमी मॉडल स्वदेशीकरण के प्रयास भी नहीं किये गये थे।

वर्तमान में, भारत के अधिकांश समाज कार्य संबंधी महाविद्यालयों में समूह कार्य का अध्यापन वैयक्तिक समाज कार्य (Case work) तथा सामुदायिक संस्था के विषयों के साथ-साथ प्रजातीय विधि (Generic Method) के रूप में किया जाता है। समूह कार्य विधि का प्रयोग सुधारात्मक (Correctional) तथा आवासीय संस्थान, अस्पतालों तथा विशेष महाविद्यालयों मे किया जाता है। इसका प्रयोग सामुदायिक कार्य में वृहद रूप से लागू किया गया है, विशेषकर बच्चों, महिलाओं तथा युवा समूहों में। इन समूहों में सामान्य गतिविधियों का स्वरूप मनोरंजन, शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक है। इसके उद्देश्य मुख्यतः स्वास्थ्य तथा सफाई पर सामाजीकरण, संरचित मनोरंजन, व्यावसायिक साक्षरता, तथा जागरुकता विकसित करना तथा पारिवारिक जीवन शिक्षा से संबंधित विषय हैं। व्यावसायिक समाज कार्यकर्ता स्वयं-सेवी समूहों के साथ कार्य करते आ रहे हैं, तथा वे पारस्परिक सहयोग तथा सहायता पर जोर देते आ रहे हैं। इसके अतिरिक्त, अस्पताल, बाल-मार्गदर्शक व्यक्तिगत उपचारगृह (Clinics) विशेष महाविद्यालय तथा नशा-मुक्ति केन्द्र उनकी उपचार योजना के अन्तर्गत एक भाग के रूप में चिकित्सीय समूह सहायता (Therapeutic Group Interventions) का प्रयोग भी कर रहे हैं।

एक व्यवसाय के रूप में समाज कार्य विषय का अभ्यास समस्त वैयक्तिक, सामुदायिक तथा सामाजिक समस्याओं के निराकरण में किया जा रहा है। इस इकाई के अन्तर्गत व्यक्तियों के माध्यम से समाज कार्य व्यवसाय को समूह कार्य विधि पर ध्यान केन्द्रित किया जाएगा जिनके माध्यम से लोगों को उनकी समस्याओं को हल किये जाने में सहायता की जाती है तथा इसमें व्यक्तिगत, समूह तथा सामुदायिक स्तरों पर भी वांछित परिवर्तन लाये जाने का भी लक्ष्य रखा गया है।

सामाजिक समूह कार्य का विस्तार

मानव प्राणी सदैव ज्ञान अर्जित करते हुए प्रगति की ओर अग्रसर होते हैं। उनमें उच्च उपलब्धि को प्राप्त किये जाने की अन्तर्निहित संभावनाएं विद्यमान होती है। व्यावसायिक समाज कार्य में मुख्य उद्देश्य व्यक्तियों को उनकी आन्तरिक प्रेरणाओं के एकीकरण तथा सामाजिक परिवेश की मांगों द्वारा उन्हें सहायता प्रदान करना होता है तथा यदि यह व्यक्तियों के समाज विकास में बाधक हो तो समाज पर्यावरण में परिवर्तन लाने में सहायता प्रदान करना है। इसमें यथास्थिति

कायम रखे जाने का कोई प्रावधान नहीं हैं। यह आवश्यकतानुसार एक या किसी अन्य का परिवर्तन किया जाने जैसा है।

कोई भी समूह आवश्यक रूप से ऐसे व्यक्तियों से मिलकर बनता है जो निरन्तर मेल-जोल रखते हुए संवादरत रहते हैं। यूबैंक (1932) एक समूह को 'सामाजिक मेल-जोल के अन्तर्गत दो अथवा इससे अधिक व्यक्तियों के संबंध के रूप में जिनके आपसी संबंध को सारांशकृत (abstracted) किया जा सके तथा जिसका उनके मध्य संबंधों को समस्त अन्य व्यक्तियों से अन्तर किया जा सके जिसके द्वारा उसे एक संस्था की संज्ञा दी जा सके' के अनुसार परिभाषित करता है। ओमस्टेड (1959) का कथन है कि एक समूह "व्यक्तिओं में अनेकता का परिचायक है जो परस्पर सम्पर्क में रहते हुए एक दूसरे के प्रति उत्तरदायी होते हैं तथा कतिपय उल्लेखनीय सामान्यता के प्रति जागरूक होते हैं"। हेयर (1962) ने समूह को एकत्रित व्यक्तियों से अलग माना है। पूर्व में उल्लेखित किये गये समूह की विशेषता उसके सदस्यों के कारण होती है जो परस्पर मेल-जोल रखते हैं जिनके प्रमुख उद्देश्य तथा मानदण्ड एक समान होते हैं जो उनकी गतिविधि को एक दिशा तथा परिसीमाएं प्रदान करते हैं तथा पारस्परिक आकर्षण का जाल (नेटवर्क) तथा ऐसी भूमिकाएं विकसित करते हैं जो एक समूह को दूसरे समूह से अन्तर करता है। ऐसी कई विभिन्न परिस्थितियां निर्मित हो सकती हैं जिनमें समूह कार्यविधि का उपयोग किसी समाज कार्यकर्ता द्वारा किया जा सकता है। कई बार समस्या से ग्रस्त कोई व्यक्ति, उदाहरण के तौर पर, एक एड्स से ग्रसित व्यक्ति जो अपने कार्यस्थल पर भेद-भाव का सामना करते हुए अपनी नौकरी को खो देता है सहायता की गुहार करता है। अन्य प्रकरणों में समस्याग्रस्त व्यक्तियों को कल्याण सेवा की ओर सहायतार्थ भेजा जाता है, जैसे कि एक महिला के प्रकरण में जो घरेलू हिंसा की शिकार है, अथवा एक नशैड़ी (Drug Addict) जिसका व्यवस्थापन किया जाना है। उन्हें अन्य व्यक्तियों के साथ जोड़कर, जो ऐसी ही समस्याओं से ग्रस्त है, उन्हें बदला हुआ परिदृश्य उन्हें स्वयं की समस्या को समझने में तथा उससे डटकर मुकाबला करने में सहायता प्रदान करता है। कई बार, समूह का परस्पर उपयोग तथा उनका अनुभव दिशा को नया मोड़ प्रदान करते हैं जिसमें कुछ सदस्य उनकी समस्या का डटकर मुकाबला करना बेहतर रूप से सीख जाते हैं।

सहायता चाहने वाले केवल व्यक्ति-विशेष ही नहीं होते वरन् कई बार वे सम्पूर्ण समूह भी होते हैं। उदाहारण के तौर पर, मानसिक रोगों से ग्रस्त बच्चों के

अभिभावक अपनी समस्याओं की चर्चा समूह के साथ कर, वे अपने बच्चों की समस्याओं का निराकरण कर सकते हैं। उन्हें एक समूह के अन्दर समस्याओं का डटकर मुकाबला करने का प्रशिक्षण दिया जा सकता है। अन्य परिस्थितियों मे, समूहों का गठन साधारण कार्यों के अभ्यास में किया जा सकता है। यह कार्य समुदाय में सफाई अभियान संबंधी कार्य भी हो सकता है या फिर एक सांस्कृतिक संध्या के आयोजन हेतु एक समूह का गठन निराश्रित बच्चों के सहायतार्थ भी किया जा सकता है। बेशक यह कहा जा सकता है कि इन कार्यदलों का कार्यकाल उनकी लक्ष्य प्राप्ति के उपरान्त समाप्त हो जाता है।

विकास में सहभागिता मार्ग अपनाये जाने के संबंध में लघु समूहों हेतु काफी अवसर विद्यमान हैं। सामाजिक परिवर्तन लाने में समूह वृहद अन्तर्निहित संभावनाओं के लिये जाने जाते हैं। कई बार, समाज के आर्थिक रूप से कमजोर समूह वर्गों के समूहों को उनकी आवश्यकताओं की पहचान किये जाने तथा उनके हितों के लिये संघर्ष करने हेतु संगठित, सूचित, लामबन्द गतिशील तथा सशक्त किया जाता है। ऐसा करने में वे सदस्यों के ज्ञान में वृद्धि करने तथा सशक्तिकरण में उपजाऊ भूमि जैसी भूमिका का निर्वहन करते हैं।

समूह कार्य के लाभ

समूहों के बहु-आयामी लाभ इस प्रकार हैं: (अ) वे व्यक्ति सदस्य के रूप में कार्य ग्रहण करते हैं, व व्यक्तियों के मध्य परस्पर मेल-जोल तथा संवाद को बढ़ावा देते हैं। अनुभवों के परस्पर आदान-प्रदान द्वारा काफी ज्ञान का लाभ होता है जो सामूहिक परिस्थितियों में उनके माध्यम से प्रतिबिंबित होता है। समूह अनुभवों के माध्यम से ही सदस्यगण विचारों का आदान-प्रदान करना, समस्याओं का समाधान करना परस्पर सहयोग प्रदान करना, नेतृत्व करना तथा एक दूसरे के विचारों का आदर करना सीखते हैं; (ब) समूहों के अन्तर्गत इस प्रकार का सुविधायुक्त ज्ञान, काफी अधिक परिवर्तनों को सामने लाता है। सदस्यगण उनके समूहों में नवीन कार्यवाही के साथ प्रयोग (Experiment) कर सकते हैं तथा समूह के बाहर इनका प्रयोग किये जाने के संबंध में सीख सकते हैं। समूह-कार्य का स्वरूप, सामूहिक कार्यवाही को प्रवर्तित करता है तथा समूह एक ऐसा स्थान है जहां सदस्यगण योजना बनाने, उसे समझने तथा सामूहिक कार्यवाही की पहल करते हैं; (स) जैसा कि सर्वविदित है, संगठन व्यक्तियों से मिलकर बनते हैं जिन्हे

कि समूह कहा जाता है। सामुदायिक स्तर पर, जब लघु समूहों के प्रयास सफल हो जाते हैं तो उन्हें लोगों के संगठनों को बनाने तथा सुदृढ़ीकरण के लिये प्रयोग किया जाता है। वे युवाओं, महिलाओं अथवा वृद्ध व्यक्तिओं की संस्थाओं के आधार स्तम्भ बन जाते हैं।

इस प्रकार समूह लोगों को वृहत्तर भूमिकाओं हेतु तैयार करते हैं जिनका कि उनके द्वारा निर्वहन करना होता है। इन सबके अतिरिक्त समूह वे स्थान हैं, जहां पर यह विशिष्ट तथ्य कि वे व्यक्ति जिनकी समस्याएं एक समान हैं वहां पर अन्यों के साथ इनका परस्पर मेल-जोल होगा तथा यह तथ्य सदस्यगणों को अत्यधिक सुरक्षा प्रदान करता है। जब समूहों में व्यक्तिगत समस्याओं पर अनुभवों का परस्पर आदान-प्रदान किया जाता है तो वे सांझी समस्याएं बन जाती हैं। सदस्यगण अपनी इन समस्याओं के संबंध में कम डर का अनुभव करते हैं जब वे अन्य व्यक्तिओं की समस्याओं के बारे में भी उतना ही समझते हैं, यदि वे उस समस्या से अधिक गम्भीर नहीं होती। सदस्यगण अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करते हैं, स्वयं को सुरक्षित महसूस करते हैं तथा समूह के अन्दर समर्थन प्राप्त करते हैं। सामाजिक समूह ऐसे ही स्थान हैं जहां गतिविधियां परस्पर मेल-जोल की सुविधाएं तथा सहायता प्रदान करती हैं। सदस्यों को भी अलग-थलग पड़ने से रोकने तथा अकेलेपन पर काबू पाने में सहायता प्राप्त होती है।

सामाजिक समूह कार्य का औचित्य

जैसा कि यह भली-भांति समझा जाता है, मानव-प्राणी एक दूसरे के साथ परस्पर मेल-जोल पर प्रबल रूप से निर्भर होते हैं (फार्ले तथा अन्य)। वे अकेले (Isolation) में नहीं रहते। उनमें सामूहिक सहभागिता की प्रवृत्ति अपरिहार्य होती है। सामाजिक रूप से कई समूहों में सहभागी होना तथा नये समूहों से पहचान करते रहना वांछनीय माना जाता है। अस्तित्व में बने रहने की आवश्यकता के अतिरिक्त, मानव-प्राणियों को आत्मसम्मान तथा "व्यक्तिगत आधिपत्य" की प्रबल इच्छाशक्ति होती है। विकास के प्रक्रम तथा व्यक्तिगत क्षमता के अनुसार, उसके द्वारा कई भूमिकाओं के निर्वहन के निरन्तर प्रयास होते रहते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि एक व्यक्ति को असंख्य चुनौतियों का सामना करने तथा हार का सामना करने हेतु तथा उससे ऊपर उठकर मुकाबला करने के लिये भी तैयार रहना होता है क्योंकि उसे सदैव सफलता नहीं मिलती। उसे कुंठा को स्वीकार

करने तथा उसे स्वीकार्य भाव से मुकाबला करना सीखना होता है। उसे कार्य सीखने तथा विश्राम करने, सोचने, तथा महसूस करने, प्रसन्न रहने तथा दुख का मुकाबला करने, नाराजगी तथा डर दोनों को इस प्रकार अभिव्यक्त करने जिससे किसी को कोई हानि न हो, को सीखने की आवश्यकता होती है। ये समस्त सीखी गई व्यवहारात्मक अनुक्रियाएं (Behavioural Responses) होती हैं, जोकि आवश्यक तौर पर अन्य मानव-प्राणियों से मेल-जोल के परिणास्वरूप स्वरूप सीखने से ही आती हैं तथा अलग-थलग रहने से कदापि इन्हें सीखा नही जा सकता है। कई बार, मानव प्राणी, जैसे-जैसे वह बढ़ता है, वह इसे अपने परिवार, के अन्दर मित्रों, पड़ोसियों तथा रिश्तेदारो से सीखता है। कार्य-स्थल भी एक ऐसा स्थान है जहां ज्ञान-अर्जन सहकर्मियों से परस्पर मेल-जोल तथा संवाद के माध्यम से होता है। वृहद् रूप से, यही एक माध्यम है जिसके द्वारा अधिकांश व्यक्ति जीवन की विभिन्न परिस्थितियों से डटकर मुकाबला करना सीखते हैं। कई बार, मानव-प्राणी स्वयं को ऐसी परिस्थितियों में पाते हैं जहाँ कि उन्हें किसी विशिष्ट परिस्थिति का सामना करने हेतु अन्य व्यक्तियों से सहायता की आवश्यकता होती है। इसका निराकरण बहुधा किसी करीबी मित्र अथवा सगे-संबंधी की सहायता से किया जाता है। तथापि, कई प्रकरणों में, उन्हें एक व्यावसायिक समाज कार्यकर्ता की सहायता की आवश्यकता होती है। यह व्यावसायिक सहायता उन्हें प्रत्यक्ष रूप से मार्गदर्शी सामाजिक मेल-जोल के रूप में तथा आसन्न समस्या के निराकरण के माध्यम से प्राप्त हो सकती है। दूसरी ओर, इसका निराकरण, स्रोतों के एकत्रीकरण के रूप में अथवा अन्यों की सहायता को सूचीकृत कर, जो सहायता करने मे सक्षम हैं, द्वारा भी हो सकती है। इस प्रकार, वृहद रूप से तात्पर्य यह है कि, सामाजिक समूह-कार्य के लक्ष्य कोई व्यक्ति अथवा सम्पूर्ण समुदाय हो सकते हैं। यह व्यक्तियों को ऐसा नियोजित सामूहिक अनुभव प्रदान कर सकता है जो उन्हें उपयोगी तथा सन्तोषप्रद सामाजिक मेल-जोल हेतु सुसज्जित कर सकता है। इसमें स्वस्थ्य तथा योग्य व्यक्तियों के साथ कार्य किये जाने अथवा विकलांग, कमजोरवर्ग (Marginalized) तथा अस्वीकार भी किये गये (Rejected) व्यक्तियों हेतु कार्य भी निहित हो सकता है। समूह कार्य, समाज कार्य की विधियो में से एक ऐसी विधि है जिसे ऐसी परिस्थितियों में उपयोग किया जाता है जब वह समाज कार्य अभ्यास के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु उपयुक्त हो (देखें कनोपका, 1972)।

इसमें कोई संदेह नही है कि समूह उन व्यक्तियों के लिये काफी सुसंगत है जिन्हें वे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। समूह प्राथमिक रूप से ज्ञान-अर्जन के शक्तिशाली संवाहक हैं। लघु समूहों की अनुभव-जन्य प्रकृति विशेष रूप से इसे अपरिहार्य बनाती है कि सदस्यगण छोटे समूहों में सहभागी होते हैं, कार्यवाही करते है तथा सीखते हैं।

सामाजिक समूह कार्य की संस्थापनाएं

सामाजिक समूह कार्य विधि व्यक्तियों, समूहों अथवा सम्पूर्ण समुदायों की परिस्थितियों का सामना करती हैं। समूहों का उपयोग बहुधा ऐसे संस्थानों द्वारा किया जाता है जिनका प्राथमिक उद्देश्य शिक्षा तथा मनोरंजन होता है। उदाहरण के तौर पर, कई प्राथमिक विद्यालय कक्षा समूहों अथवा पारिवारिक समूहों को उपयोग में लाते हैं (देखें डेविस 1975)। कई युवा समूह एक विशिष्ट गतिविधि अथवा प्रयोजन हेतु गठित किये जाते हैं। किशोर-वय के एकसमान समूह उनकी रुचियों के विषयों का निष्पादन करते हैं। बड़े बूढ़ों के लिये भी सामुदायिक केन्द्र तथा वृद्ध व्यक्तियों के क्लब स्थापित किये जाते हैं। ऐसे समूहों का गठन भी किया जाता है जिनका उपयोग मनोचिकित्सकों/विशेषज्ञों के रुग्णालयों (Clinics) तथा मानसिक स्वास्थ्य रुग्णालयों (Clinics) द्वारा किया जाता है। बहुधा समाज कार्यकर्ताओं द्वारा उपयोग किये जाने वाले स्वतन्त्र तथा असंरचित समूह रोगियों से बातचीत करने तथा उनकी भावनाओं को उजागर करने में उनकी सहायता करते हैं। इन उपचार समूहों का प्रयोग कई चिकित्सा संस्थापनाओं में किया जाता है। कई बार पीड़ा से युक्त व्यक्ति सहायता की गुहार करते हैं अथवा उन्हें समूह की ओर सहायतार्थ तथा उनकी समस्याओं के प्रतितोषण हेतु भेजा जाता है। ऐसा बहुधा परिवार कल्याण सेवाओं, मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं, सुधारक संस्थापनाओं, विद्यालय समाज कार्य, भौतिक तथा मानसिक रूप से विक्षिप्तों हेतु कार्य करने वाली संस्थाओं तथा अन्य संस्थाओं में होता है। ऐसे समूह जो सहायता की मांग करते हैं, उनमे समुदाय के कमजोरवर्ग (Marginalized) अथवा भेद-भाव समस्या से पीड़ित (Discriminated) व्यक्ति, अभिभावकों के वे समूह जो उनके बच्चों की विशेष आवश्यकताओं के संबंध में और अधिक ज्ञान का अर्जन करने के इच्छुक हैं, उन व्यक्तियों के समूह जिनमें मद्यपान करने वाले तथा नशैड़ी (Drug Abuse) सम्मिलित हैं, हो सकते हैं, सामुदायिक कार्यदल हो

सकते हैं जो और अधिक ज्ञान अर्जन के इच्छुक होते हैं तथा मिल-जुल कर समुदाय से संसाधनों को एकत्रित करते हैं जिससे वे स्वास्थ्य, घरेलू हिंसा आदि समस्याओं का समाधान ढूंढते हैं। इसके अतिरिक्त, समूहों के साथ समाज कार्य, सहायता (Intervention) का महत्वपूर्ण क्षेत्र वह है जब सहायता हेतु कोई विशिष्ट अनुरोध प्राप्त नहीं होता है परन्तु समुदाय वृहद रूप से यह महसूस करता है कि इन सेवाओं की प्रतिरोधात्मक तथा सुधारात्मक आधार पर आवश्यकता है। इनमें संस्थान देखभाल के अन्तर्गत बच्चों तथा युवाओं हेतु सेवाएं, तथा सड़क पर रहने वाले निराश्रित बच्चों (Street Children) आदि के साथ समूह कार्य शामिल हैं।

लघु समूह समुदाय परिवर्तन तथा विकास के महत्वपूर्ण साधन हैं। वर्तमान परिदृश्य में, सूक्ष्म ऋण तथा बचतों (Micro Credit & Savings) के क्षेत्र में स्वयं-सेवी समूह निर्धन वर्ग हेतु कार्यक्रमों के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं।

सामाजिक समूह कार्य का मूल्य आधार

कोई भी व्यवसाय जो मानव प्राणियों से इतनी निकटता से अभ्यास करता है, वहां मूल्य आधार का अत्यधिक महत्व हो जाता है। ये मूल्य हमारे उन विश्वासों की अभिव्यक्ति करते हैं जो हमारी प्राथमिकताओं को प्रभावित करते हैं कि किसी व्यक्ति को किस प्रकार व्यवहार करना अथवा नहीं करना चाहिए। प्रत्येक समूह में एक ऐसा कार्यकर्ता होता है जो वैयक्तिक सदस्यों तथा पूर्ण समूह हेतु कार्यक्रमों तथा उनमें सन्निहित होने वाले हस्तक्षेप (intervention) को एक मूल्य आधार द्वारा निर्धारित किये गये मार्ग द्वारा विकसित करता है। उसके अन्दर व्यक्ति की प्रकृति तथा उसकी क्षमताओं, सदस्यों की भूमिका तथा समूह कार्यकर्ताओं की भूमिका के संबंध में अपने कुछ मूल्य होते हैं तथा अवधारणाएं होती हैं। समूहों के साथ कार्य करने में ये मूल्य विधियों को प्रभावित करते हैं। तीन मूल्य प्रणालियां जो प्रयोग में आती हैं, वे प्रासंगिक मूल्य, लाभार्थियों (clients) के मूल्य तथा समूह कार्यकर्ता के मूल्य होते हैं (देखें मोरेल्स तथा शियाफोर,1977)। मूल्यों के प्रासंगिक स्रोत उक्त समाज के मूल्य, वह संस्था जो समूह को प्रवर्तित करती है के मूल्य तथा समाज कार्य व्यवसाय के मूल्य होते हैं। सामाजिक मूल्य, जैसे कि दोनों लिंगों में समानता, स्वयं के विकास का

उत्तरदायित्व तथा लोकतान्त्रिक सहभागिता समूह से मेल-जोल को (Group interaction) प्रभावित करते हैं।

वे संस्थाएं जो समूह कार्य को प्रायोजित करती हैं उनके स्वयं के अपने मूल्य होते हैं जो समूह कार्यकर्ता तथा नेतृत्व पर लागू होते हैं। उदाहरण के तौर पर, क्या निर्णय समूह के भीतर अथवा उसके बाहर लिये जाने हैं? क्या समूहों को परस्पर मेल-जोल करने तथा वार्तालाप करने की अनुमति प्रदान की जाएगी ? शक्तियां किन-किन व्यक्तियों में सन्निहित हैं?

समूहों पर मूल्यों का अन्य प्रभाव व्यवसाय से आता है। समूह कार्यकर्ता समाज कार्य के सामान्य आधार तथा व्यावसायिक मूल्यों जिनका कि वह समर्थन करता है तथा जिसका उसके कार्य से संबंध है, के अन्तर्गत कार्य का निष्पादन करता है। यहां से ही मानवीय गुण के मूल्य तथा गौरव, किसी व्यक्ति की स्वायत्तता, सहभागिता का महत्व, एक गैर निर्णायात्मक, रवैये को कायम रखने, व्यक्ति तथा समाज के परस्पर निर्भर होने की पुष्टि करता है। (देखें सिपोरिन,1975)।

समूह के सदस्यों के स्वयं के अपने समुच्चय मूल्य होते हैं। समूह कार्यकर्ता इस बारे में जागरूक होते हैं तथा इस तथ्य के बारे मे भी अवगत होते हैं कि सदस्यों के ये मूल्य जाति, संस्कृति तथा समाज से प्रभावित होते हैं। समूह कार्यकर्ताओं को निरन्तर सदस्यों को उनके स्वयं के मूल्यों को समझाने में सहायता करनी होती है तथा अन्य सदस्यों के मूल्यों का सम्मान भी करना होता है। जहां कहीं आवश्यक हो, उसे अपने मूल्यों के बारे में स्पष्टीकरण भी देना होता है तथा मूल्यों के टकराव का निराकरण भी करना होता है।

कार्यकर्ताओं की व्यक्तिगत मूल्य प्रणालियां उनके द्वारा समूहों के साथ कार्य करने की पद्धति को भी प्रभावित करती हैं। यह महत्वपूर्ण होता है कि वे उनके मूल्यों के प्रति जागरूक हों तथा वह पद्धति जिसके माध्यम से वे समूहों में अपने व्यावसायिक कार्यों के प्रति अपना दृष्टिकोण रखते हैं, उसमें वे कहीं भी बाधा नहीं आने दें।

उपरोक्त की गई चर्चा के अतिरिक्त, समूह कार्यकर्ता समूह कार्य व्यवसाय के प्रति कतिपय मूल्यों में एक सामान्य हित तथा अभिरुचि को परस्पर भी बांटते हैं। कनोपका (1963) के अनुसार ये मूल्य निम्नानुसार हैं :

क) किसी समूह के अन्तर्गत विभिन्न रंगों, मतों, आयु, मूल राष्ट्रीयता तथा सामाजिक वर्ग की सहभागिता तथा रचनात्मक संबंध।

ख) एक सहयोगात्मक लोकतन्त्र के सिद्धान्तों में सन्निहित सहयोग तथा पारस्परिक निर्णय लेने के मूल्य।

ग) समूह के अन्तर्गत, व्यक्तिगत रूप से पहल किये जाने का महत्व।

घ) परस्पर हितों से संबंधित विषयों से जुड़े सहभागिता के साथ-साथ विचारों तथा भावनाओं की अभिव्यक्ति करने की स्वतन्त्रता का महत्व, जो व्यक्तिगत सदस्यों अथवा संपूर्ण समूह के विषयों से संबंध रखते हैं तथा जो समूह के अन्तर्गत निर्णय लेने की प्रक्रिया में सन्निहित होने का अधिकार रखते हैं।

ड.) समूह के अन्तर्गत वैयक्तिकता (Individualization) के मूल्यों का प्रतिपादन ताकि प्रत्येक सदस्य की विशिष्ट अभिरुचियों की आपूर्ति हो सके।

इन मूल्यों को प्रयोग में लाये जाने हेतु समूह ही सर्वाधिक उपयुक्त होते हैं। अतः समूहकार्यकर्ताओं को भली-भांति प्रशिक्षण दिया जाना आवश्यक है जो विभिन्न मूल्य प्रणालियों के प्रति संवेदनशील हो ताकि उनके समूह कार्य अभ्यास से सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त किये जा सकें।

सारांश

इस अध्याय में, हमारे द्वारा सामाजिक समूह कार्य का समाज कार्य की विधि के रूप में परीक्षण किया गया है। हमारे द्वारा सामाजिक समूह कार्य की परिभाषा के स्वरूप तथा इसके इतिहास की पृष्ठभूमि, इसके विस्तार, इसके सुसंगत होने तथा वे संस्थान जहां समूह कार्य का अभ्यास किया जा रहा है, के विषय पर भी चर्चा की गई है। समाज कार्य के अपने स्वयं के मूल्य होते हैं। सामाजिक समूह कार्य की एक विधि के रूप में इसका एक अपना मूल्य आधार भी विद्यमान है। इस इकाई में इन मुद्दों का परीक्षण किया गया। इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात्, आप समाज कार्य की विधि के रूप में समाज कार्य के कुछ सिद्धान्तों के बारे में जान गये होंगे। कार्यक्रम के द्वितीय वर्ष के दौरान आप सामाजिक समूह कार्य के बारे में अधिक विस्तृत अध्ययन करेंगे।

कुछ उपयोगी पुस्तकें

- डेविस बनार्ड (1975): द यूज ऑफ ग्रुप्स इन सोशल वर्क प्रेक्टिस, डिपार्टमेंट ऑफ एपलाईड सोशल स्टडीज, वारविक यूनिवर्सिटी, राऊटलेज तथा केगन पॉल।
- यूबैंक, अर्ल. ई (1932): द कॉनसेप्ट्स ऑफ सोशिआलोजी, बोस्टन, डी. डी. हीथ। इन नार्थेन, हेलन, (1969): सोशल वर्क विथ ग्रुप्स, कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयार्क, लन्दन।
- फार्ले, डब्लू. ओ. लारी, एल.एस एण्ड बॉयल, एस. डब्लू. (2003) इन्ट्रोडक्शन टू सोशल वर्क, पीयरसन कस्टम पब्लिशर्स, संयुक्त राज्य अमेरिका (यू.एस. ए.)।
- नार्थन हेलन (1988): सोशल वर्क विथ ग्रुप्स, द्वितीय संस्करण न्यूयार्क: कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस।
- रीड केनेथ ई. (1997) सोशल वर्क प्रेक्टिस विथ ग्रुप्सः ए क्लीनीकल पर्सपेक्टिव द्वितीय संस्करण। पेसिफिक ग्रोव सी.ए.: ब्रुक्स/कोले पब्लिशिंग कम्पनी, इन फार्ले, डब्लू.ओ; लार्री एल.एस.तथा बॉयल. एस. डब्लू (2003): इन्ट्रोडक्शन टू सोशल वर्क, पीयरसन कस्टम पब्लिशिंग, सयुक्त राज्य अमेरिका (यू.एस.ए.)।
- टोसलैंड, आर. डब्लू एण्ड रीवास, आर. एफ. (1984): एन इन्ट्रोडक्शन टू ग्रुप वर्क प्रेक्टिस, मेकमिलन पब्लिशिंग कम्पनी, न्यूयार्क।
- हेयर, ए. पॉल (1962): हैडबुक ऑफ स्माल ग्रुप्स रिसर्च, न्यूयार्क, फ्री वर्क प्रेस ऑफ ग्लेनको।
- कनोपका, गिसेला (1972): सोशल ग्रुप वर्कः ए हेल्पिंग प्रॉसेस, द्वितीय संस्करण : प्रेन्टिस हाल, न्यू जर्सी।
- ओमस्टेड, एम एस (1959): द स्माल ग्रुप, न्यूयार्क, रेण्डम हाऊस।
- सिपोसिन, एम (1975): इन्ट्रोडक्शन टू सोशल वर्क प्रेक्टिस, न्यूयार्क; मेकमिलन पब्लिशिंग कम्पनी, इन्स।

- कनोपका जी (1960): "ग्रुप वर्क : ए हैरीटेज एण्ड ए चैलेंज" सेलेक्टेड पेपर्स इन सोशल वर्क विथ ग्रुप्स न्यूयार्कः नेशनल एसोसियेशन ऑफ सोशल वैल्फेयर।
- मोरेल्स ए टी एण्ड षीफोर, बी. डब्लू (1977): ए प्रोफेशन ऑफ मैनी फेसेस, सातवां संस्करण एलिन तथा बेकन, संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएसए)।
- कोरसिनी, आर. जे (1957): मेथड्स ऑफ ग्रुप साइकोथिरेपी न्यूयार्कः मैकग्रा-हिल। इन कनोपका गिसेला (1972) सोशल ग्रुप वर्कः ए हेल्पिंग प्रॉसेस, द्वितीय संस्करण; प्रेन्टिस हाल, न्यू जर्सी।
- फ्रैंक, जेडी (1952): ग्रुप मेथड्स इन साइकोथिरेपी, *जरनल ऑफ सोशल इश्यूज*। इन कनोपका गिसेला (1972): सोशल ग्रुप वर्क : ए हैल्पिग प्रोसेस, द्वितीय संस्करण; प्रेन्टिस हाल, न्यू जर्सी।